# सामाजिक संरचना के विविध स्वरूप

सामाजिक संरचना की कार्य-विधि, प्रत्येक संरचना को एक विशिष्ट स्थान व स्वरूप प्रदान करती है। रेडक्लिफ ब्राउन ने संरचना संबंधों का उपयोग नातेदारी संबंधों, आर्थिक संगठनों एवं धार्मिक रीति-रिवाजों में निहित निरंतरता के आधार पर बने प्रतिमानों से किया है। सामाजिक संरचना के विविध स्वरूप निम्नलिखित है:—

## (1) संरचना अवस्थिति के रूप में:—

सामाजिक श्रेणी का निर्धारण व्यक्तियों की आर्थिक जीवनशैली से प्रभावित होता है। व्यक्तियों को अलग-अलग श्रेणी में बांटने की प्रक्रिया अवस्थिति कहलाती है।

## (2) संरचना भूमिका के रूप में:—

भूमिका निर्वहन ही व्यक्ति की सामाजिक संबंध के व्यवहार प्रतिमान को प्रतिबिंबित करता है। उदाहरण के लिए — एक व्यक्ति की पहचान पति की भूमिका निभाने की दृष्टिकोण से होती है जो कि विवाह संबंध का भाग है। एक पति होने का अर्थ है, उसकी पत्नी भी है। स्पष्ट है कि एक भूमिका विशेष की पहचान, किसी-न-किसी दूसरी भूमिका के सापेक्ष होती है। भूमिकाएं औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की हो सकती है। हर व्यक्ति अनेक प्रकार की भूमिकाओं का वरण व पालन कर सकता है। इस प्रकार, भूमिकाओं का एक समग्र अर्थात संकुल का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति बहुत सारे भूमिकाओं का निर्वहन करता है। संरचनात्मक समाजशास्त्रियों का मानना है कि

व्यक्तियों के विश्वास एवं अभिवृत्तियां उनकी भूमिकाओं के अनुसार बदलते है, न कि इसके विपरीत रूप में।

(3) संरचना एक संगठन के रूप में :—

सामाजिक संबंध व संरचनात्मक संबंधों में अन्तर होता है। सामाजिक संबंधों को मूर्त व्यक्तियों के अमूर्त व्यवहारों के संदर्भ से ही समझा जाता है। संबंधों की जटिलता ही संरचना को सामान्य या विशेष बनाती है जिसके आधार पर समाज विशेष की संरचनाओं को समझने का प्रयास किया जाता है।

(4) संरचना वितरण के रूप में :—

सामाजिक संरचना को सामाजिक संगठन के रूप में समझने के लिए हम नियम व पद्धतियों को ध्यान में रखते है। वितरण किसी भी सामाजिक संरचना के उस स्वरूप को इंगित करता है जिसमें विभिन्न मनुष्यों के बीच अन्तर्संबंधों को जाना जाता है। जिसके साथ उनकी प्रस्थिति व संबंधित भूमिका जुड़ी रहती है। उदाहरण के तौर पर जनसंख्या के अन्तर्गत जिन आधारों पर विभेद किया जाता है उसके आधार पर वितरण को समझा जा सकता है

(5) संरचना एक जाल के रूप में :—

सामाजिक संरचना की धारणा व्यक्तियों के पद, प्रस्थिति तथा उससे संबंधित भूमिकाओं की संपूर्णता या समग्रता से है। एक जाल के रूप में सामाजिक संरचना की धारणा व्यक्तियों के उस योग से जुड़ी है जिसके अन्तर्गत उनके

अनेक प्रत्यक्ष सामाजिक संबधों की कड़िया होती है, ये कड़िया ही व्यक्तियों के सामाजिक दायरे विस्तृत करती है जिससे व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर आता जाता रहता है, उदाहरण के लिए अनेक भारतीय अमेरिका में इसलिए आ गए क्योंकि उनके रिश्तेदार उस देश में पहले से है और संबंधों का वह जाल उन्हें वहाँ जाने में सहायता करता है।

सामाजिक संरचना मानव शरीर की भाँति सामाजिक व्यवस्था को भी एक आकार देती है। प्रत्येक व्यवस्था की अपनी सामाजिक संरचना होती है जिसकी निरंतरता एवं स्थायित्व संरचना विशेष को बनाए रखने वाले प्रकार्यों पर निर्भर करती है सामाजिक संरचना सामाजिक व्यवस्था को संगठित एवं विघटित स्वरूप दोनों को इंगित करती है